वैदिक विज्ञान की ओर .....

9

वर्तमान विज्ञान के इन अन्तर्विरोधी परिणामों, सिद्धान्तों व मार्गों के कारण ही विश्वभर में नाना भयंकर दुष्परिणाम देखे जा रहे हैं। कहीं-२ आज का प्रबुद्ध मानव टैक्नोलॉजी को ही विज्ञान मानकर नाना प्रकार के सुविधा-साधनों की खोज को ही अपना लक्ष्य बनाए हुए है। मेरा मत है कि अन्तर्विरोधों से परिपूर्ण थ्योरिटीकल फिजिक्स के आधार पर विज्ञान की अन्य शाखाएं एवं टैक्नोलॉजी कभी भी पूर्ण सुखदायी नहीं हो सकतीं। जरा विचारें कि जिस कृषि वैज्ञानिक ने रासायनिक उर्वरकों का आविष्कार किया, उसने यह तो देखा कि इनके प्रयोग से कृषि उत्पादन बढ़ेगा परन्तु उसे आयुर्विज्ञान का कुछ भी ज्ञान नहीं था। इस कारण उसे यह लेशमात्र भी आशंका नहीं थी कि इस खाद से उत्पन्न फल, अनाज आदि मानव व पशुओं के शरीरों को रोगों का घर बना देंगे। उसे तो कृषि विज्ञान का भी पूरा ज्ञान नहीं था अन्यथा वह जान सकता कि उसके द्वारा आविष्कृत खाद भूमि को शनैः-२ बंजर बना देंगे। आज हम सर्वत्र विष खा रहे हैं, जल में विष पी रहे हैं, वायु में विष ले रहे हैं। कोई एलोपैथी दवा ऐसी नहीं, जिसका कोई दुष्परिणाम न हो। आज जिस सूचना तकनीक एवं रोबोट तकनीक पर विश्व मोहित है, वह भी अपूर्ण विज्ञान का एवं सुविधाओं की भूख का पागलपन है। कोई इसको अनुभव करे या न करे परन्तु मैं संसार से कहना चाहता हूँ कि ये सभी तकनीकें विश्व को भयंकर विनाश की ओर ले जा रही हैं। दुर्भाग्यवश मैं भी सूचना तकनीक से ही आपको अपने विचार देने के लिए विवश हूँ। दवाएं बढ़ने के साथ रोग, शारीरिक व मानसिक दुर्बलता में वृद्धि हुई, कृषि उत्पादन बढ़ने के साथ-२ उसकी गुणवत्ता में कमी आयी, मनोरंजन के साधनों ने चरित्र को नष्ट कर दिया। वर्तमान विज्ञान निरन्तर अपनी भूलों को खोज-२ कर बता भी रहा है परन्तु तब तक मानव उस विज्ञान तकनीक में ऐसा मदमस्त हो जाता है कि जीवन पर संकट को अनुभव करके भी उस साधन को त्यागने का साहस नहीं कर पाता।

क्रमशः .....

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक